अर्ध शताधिक ग्रंथ कर्ता ,इन्दू)हिन्दू (धर्म प्रदाता,
संचलनात्मक रचयिता ,त्रैत सिद्धान्त आदि कर्ता

श्री श्री श्री आचार्य प्रबोधानन्द योगिश्वर जी

प्रवक्ता कौन हैं?

Translation by
K.Ramani B.Com

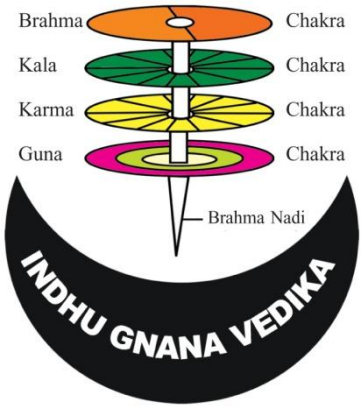

Published by
Indhu Gnana Vedika
(Regd.No.168/2004)

IMP Note : To know the true and complete meaning of this Grandha (book) it must be read in Telugu Language.

प्रवक्ता कौन हैं?

वक्ता अर्थात् अच्छे से बोलनेवाला या अच्छे से बातें करनेवाला कह सकते हैं। किसी एक विषय के बारें में अच्छे से बातें करनेवाले को हम वक्ता कहेंगे। सब लोगों में अच्छी तरह से बातें करने की क्षमता नहीं होती है, केवल कुछ ही लोगों में बातें करने की क्षमता होने की वजह से, केवल कुछ ही लोगों को वक्ता कहा जाता है। दस लोगों में हो, सौ लोगों में हो निर्भय होकर, बिना रुकावट बोलनेवाले वक्ता कुछ लोग होते हैं, उन लोगों में भी मुख्य विषय में, तथा विषय सारांश के बारें में बातें करनेवाला बेहद बिरल ही होते हैं। मुख्य विषयों में अति मुख्य विषय, रहस्यों में अति रहस्य जो होता है, उसके बारें में कहनेवाले बेहद बिरल होते हैं। उस प्रकार के बिरल व्यक्ति को मुख्य वक्ता के रुप में पहचान कर उन्हें प्रवक्ता कहा जाता है। किसी एक विषय को अच्छे से व्यक्त करनेवाले व्यक्ति को वक्ता कहते हैं। व्यक्त हुआ विषय साधारण होने की वजह से, उस विषय में जितना भी अच्छा बोले उन्हे वक्ता ही कहेंगे। बेहद निपुणता से बात करने की क्षमता रखनेवाला, बेहद होशियारी से बातें करनेवाला, उनसे कहलवाया गया विषय साधारण विषय होना, उत्कृष्ट विषय सारांश न कहने की वजह से बातें करनेवाले व्यक्ति को वक्ता कहेंगे.

इस प्रपंच में सभी विषयों से बढकर विषय, सभी रहस्यों से बढकर रहस्य, ज्ञात करनेवाले विद्याओं में सबसे मुख्य होता है परमार्थ ज्ञान। साधारण ही नहीं बल्कि असाधारण विषय अर्थात् दैवज्ञान को बोल पाने वाले वक्ता को प्रवक्ता कहते हैं। इससे सिद्ध होता है कि सबसे उत्कृष्ट दैवज्ञान के सिवाए अन्य सभी विषयों में जो भी कहें, जैसा भी कहें कहनेवाले व्यक्ति को वक्ता ही कहा जाएगा। वो जो भी सुनता है, जो भी देखता है, जो भी पढ़ता है उसे विवरण कर कहनेवाले व्यक्ति को बोधक कहेंगे। वह दूसरों द्वारा जो भी सीखता है उसे पुन: उस विषय से अनभिज्ञ व्यक्तियों से कहनेवाले को बोधक कहा जाता है। वह व्यक्ति दूसरों से विषय को जानकर उस विषय से अनभिज्ञ लोगों से कहने को बोधन करना कहा जाता है। और बोधन करनेवाले को बोधक कहा जाता है। विषय

thraithashakam-36

को जानकर विषय से अनभिज्ञ लोगों को बतानेवाले को वक्ता भी कहा जाता है। इससे पता चलता है कि वक्ता कहें या बोधक कहें दोनों एक ही है। बोधक को वक्ता भी कह सकते हैं। वक्ता को बोधक भी कह सकते हैं। वक्ता व्यक्त करनेवाले विषय हो, या बोधक बोधन करनेवाले विषय हो वे सभी साधारण प्रपंच विषय होते हैं।

उनका सीखा हुआ, दूसरों से सुना हुआ हो फिर भी परमात्म ज्ञान से अनभिज्ञ लोगों को बोधन करनेवाला बोधक हो फिर भी उन्हें 'प्रबोधक' कहेंगे। ठीक उसी तरह गत दिनों में दूसरों से सीखा हुआ दैवज्ञान विषयों को, विषय से अनभिज्ञ लोगों को व्यक्त(सूचित) करनेवाले वक्ता को 'प्रवक्ता' कहेंगे। कथित विषय सबसे विशेष, तथा सबसे गुह्य(गुप्त) होता है। इसलिए कथित ज्ञान के अनुसार कहनेवाले व्यक्ति को प्रवक्ता कहेंगे। प्रपंच विषयों का कितना भी बोधन किया गया हो उन्हें बोधक ही कहा जाएगा। दैव विषयों को कम बोधन करनेवाले व्यक्ति को प्रवक्ता कहेंगें। प्रपंच विषयों को बोधन करनेवाला हो, दैव विषयों को बोधन करनेवाला हो, दोनों बोधक ही होते हैं। हलांकि प्रपंच विषयों को बोधन करनेवालों को वक्ता, तथा परमात्म विषयों को बोधन करनेवाले को प्रवक्ता कहा जाता है। इस पद्धति के अनुसार वक्ता कोई भी हो सकता है। उसी तरह प्रवक्ता हो सकता है। अब कुछ लोगों के मन में प्रश्न उठने की संभावना हो सकती है। उन लोगों के प्रश्न कुछ इस प्रकार से हैं।

प्र :- हम दूर-दराज के एक गाँव से हैं। हमारे गाँव में अनेक लोग अनपढ हैं। हमारे गाँव में कोई सरकारी पाठशाला भी नहीं है। इस वजह से हम लोगों ने स्वयं एक व्यक्ति को टीचर(बोधक) नियुक्त किया। उन से दिन के समय में पाठशाला में बच्चों को शिक्षा दिलवा रहे हैं। रात के समय में हम बड़े उस बोधक से महाभारत, भागवद्, रामायण की कथा सुन रहे हैं। दिन के समय में पाठशाला में हमारे बच्चें प्रपंच से संबंधित शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। रात्रिवेला भागवद्, रामायण की कथा सुन कर हम लोगों में दैवभक्ति उत्पन्न हो रही है। इस प्रकार एक ओर हमारे बच्चें, तथा दूसरी ओर हम सब सही राह में चल रहे हैं। हम सब ने जिस टीचर(बोधक) को नियुक्त किया उन्हें वक्ता कहना चाहिए या प्रवक्ता कहना चाहिए। क्या कहना चाहिए?

उ :- आप लोगों के द्वारा नियुक्त टीचर दिन के समय में बच्चों को प्रपंच से संबंधित पढ़ाई पढ़ा रहे हैं इसलिए उन्हे बोधक कहना चाहिए। वे बोधक हैं इसलिए उन्हे वक्ता भी कह सकते हैं। रात के समय में बड़े-बुजुर्गों को भागवद्, रामायण बोध करने के कारण बड़े-बुजुर्गों में भक्ति भावना बढ़ी। भक्ति भावना पूर्णत: परमात्मा से संबंधित नहीं है, इसलिए इसे भी परमात्मा से अलग प्रपंच से संबंधित समझ सकते हैं। इस कारण बड़े-बुजुर्गों को बोधन करने के कारण वे भी वक्ता ही कहलायेंगे। प्रवक्ता नहीं कहलायेंगे।

प्र :- भक्ति भाव उत्पन्न करने वाले भागवद्, रामायणों को बोध करनेवाला व्यक्ति यदि प्रवक्ता नहीं कहला सकता, तो फिर किस बारें में बोध करनेवाला प्रवक्ता कहलायेगा।

उ :- आपके के गाँव में बच्चों की शिक्षा, तथा बड़े-बुजुर्गों को भागवद्, रामायण बोध करने वाले टीचर का परिवार पास ही नगर में रहते है। इस कारण वह हर रविवार को अपने परिवार से मिलने नगर जाता रहता था। हर रविवार को अपने घर के पास मंदिर में रात ८ बजे से लेकर १० बजे तक भगवद् गीता पढ़कर लोगों को सुनाया करता था। नगर में भगवद् गीता को पढ़कर लोगों को विवरण बताने के कारण वहाँ वे प्रवक्ता बने। उन्हें किसी ने प्रवक्ता नहीं बुलाया किन्तु हम सबको उन्हें प्रवक्ता बुलाना चाहिए। क्योंकि उन्होंने रात ८ बजे से लेकर १० बजे तक ज्ञान बोध किया। भगवद् गीता में परमात्म ज्ञान होने के कारण , बोघ करनेवाले को वक्ता नहीं बल्कि प्रवक्ता कहा जाता है , पहले भी बताया जा चुका है। गाँव के पाठशाला में पढ़ाना , गाँव में भागवद् बोध करना इन सबके बावजुद भी , उस ज्ञान को परमात्मा से संबंधित ज्ञान नहीं कहा जाएगा इसलिए वहाँ उन्हें वक्ता कहना पड़ा। इस प्रकार एक व्यक्ति कुछ जगहों में वक्ता तथा कुछ जगहों में प्रवक्ता कहलाना उनका बताया हुआ बोध ही कारण बनता है।

thraithashakam.36

प्रवक्ता कौन हैं?

प्र :- यदि एक सामान्य अध्यापक (टीचर) भगवद् गीता बोध कर रहा हो और उन्हें प्रवक्ता मान लिया जाए तो ऐसे अनेक लोग प्रवक्ता हो सकते हैं। अत्यन्त ख्याति प्राप्त प्रवक्ताओं के पंक्ति में सामान्य मनुष्यों का नाम जोड़ना, क्या बड़े प्रवक्ताओं के लिए अपमानजनक बात नहीं होगी।

उ :- एक सूत्र के अनुसार प्रवक्ता कौन हैं एक विधान द्वारा हमें सूचित करना था , बड़े प्रवक्ताओं के साथ समानता करना हमारा उद्देश्य कदापि नहीं था। छोटे प्रवक्ताओं को एवं बड़े प्रवक्ताओं को एक ही नाम से अर्थात् प्रवक्ता कहें या न कहें प्रवक्ता प्रवक्ता होते हैं, वक्ता वक्ता ही होते हैं। बड़े प्रवक्ता हो, या छोटे प्रवक्ता हो वह परमात्म ज्ञान बोध करता है इसलिए उन्हें प्रवक्ता कहा गया हमें भूलना नहीं चाहिए।

प्र :- आपने कहा है श्री कृष्ण जी भगवान हैं। ग्रंथों में भी यही कहा गया है। श्री कृष्ण जी ने भगवद् गीता बताया। भगवद् गीता परमात्मा से संबंधित ज्ञान बोध करता है। इस कारण श्री कृष्ण जी को सूत्र के अनुसार प्रवक्ता ही कहेंगे। यदि भगवद् गीता को पढ़ कर बोध करने वाले को प्रवक्ता कहा जाता है तो , गीता के कर्ता श्री कृष्ण जी के साथ समानरूप से गीता को पढनेवाला प्रवक्ता कहलाना उचित है - क्या ?

उ :- श्री कृष्ण जी ने गीता का बोध किया , इसलिए वे प्रवक्ता हुए। मनुष्य ने गीता को पढ़ कर बताया, इसलिए वे भी प्रवक्ता हुए। गीता की सृष्टि कर बताने वाले श्री कृष्ण जी थे। ज्ञान को बताने वाला स्वयं ईश्वर होता है। इसलिए श्री कृष्ण जी को परमात्मा कहते हैं। धरती पर विद्यमान ज्ञान से अनजान रहने वाला मनुष्य है। धरती पर विद्यमान ज्ञान से परिचित हो कर उसे विवरणपूर्वक बताने वाला प्रवक्ता कहलाने के बावजुद वह मनुष्य ही है। दैव ज्ञान को गीता के रूप में बताने वाले परमात्मा हैं उसे जानने वाला मनुष्य होता है। फिर भी यहाँ दैव ज्ञान बताने के कारण, एक ओर परमात्मा तथा दूसरी ओर मनुष्य समान रुप से प्रवक्ता कहलाने के बावजुद , दोनों का नाम प्रवक्ता समान रूप से लेने के बावजुद , ओहदे में एक को परमात्मा, तथा दूसरे को जीवात्मा समझना

thrithashakam-36

चाहिए। परमात्मा ईश्वर है जीवात्मा मनुष्य होता है। जीवात्मा परमात्मा दोनों आत्माएँ होते हुए भी उन दोनों में तारतम्य हैं। एक आत्मा जो सबसे बड़ा परमात्मा है तथा दूसरा छोटा जीवात्मा हैं। अतएव मुख्य समाचार बताने वाला कोई भी हो प्रवक्ता हो सकता है , परन्तु प्रवक्ता होने मात्र से ही सब समान नहीं हो सकतें।

उदाहरण के लिए तिरूपति बालाजी के दर्शन करने निमित्त मंदिर के बाहर पंक्तियों में खड़े लोगों को भक्तजन कहना चाहिए। क्योंकि वहाँ पर उपस्थित सभी जनों पर भक्त शब्द लागू होता है। हलांकि उस पंक्ति में खड़े लोगों में कई लोग गरीब, कई लोग धनी, तथा कई लोग मध्यम वर्गीय हैं। पंक्ति में खड़े होने के कारण उन सभी को हम भक्त कह रहे हैं। सारे जन केवल भक्त कहलाने मात्र से ही धनी व्यक्ति गरीब नहीं हो जाता, गरीब व्यक्ति धनी नहीं हो जाता, या फिर दोनों धनी नहीं बन जातें। जिस प्रकार से भक्त नाम सब पर लागू होने मात्र से ही उनके आर्थिक स्थीति में कोई बदलाव नहीं आता और दर्शन के बाद धनी धनी तथा गरीब गरीब ही रहता है, उसी तरह से दैवमार्ग का बोधन करनेवाले को प्रवक्ता कहकर पुकारा जाता है जब, एक ओर परमात्मा को तथा दूसरी ओर मनुष्य पर प्रवक्ता नाम लागू होने पर भी, आत्माओं के विषय में कभी भी एक समान नहीं होते हैं। सब समान रूप से प्रवक्ता कहलाने के बावजुद भी, ज्ञान में धनी अर्थात् परमात्मा, परमात्मा ही हैं। ज्ञान में गरीब जीवात्मा, जीवात्मा ही होता है। प्रवक्ता कहलाने मात्र से परमात्मा जीवात्मा नहीं बन जाता, जीवात्मा परमात्मा नहीं बन जाता या दोनों एक जैसा बनना नमुमकिन है। जिस तरह से मंदिर के प्रांगण में खड़े भक्तजन में समानता नहीं हो सकती, उसी तरह से बोधन कर रहे सारे प्रवक्ताओं में कोई समानता नहीं हो सकती। बोधन करनेवालों में भगवान अर्थात् परमात्मा भी हो सकते हैं। पंड़ित अर्थात् मनुष्य भी हो सकता है।

प्र :- प्रवक्ता का तात्पर्य अत्यंत उत्कृष्ट व्यक्ति, तथा मनुष्यों के लिए अनजान ज्ञान के ज्ञाता होता है ऐसी हमलोगों की भावना थी। अभी आपका कहना है कि धरती पर कोई भी प्रवक्ता बन सकता है। जितने लोग भी प्रवक्ता बन सकते हैं। इससे पता चलता है प्रवक्ता एक नहीं बल्कि जितने लोग भी हो

सकते हैं। इससे पहले हमारी भावना थी कि एक मत(धर्म) में एक ही प्रवक्ता होता है, हिन्दुओं के लिए श्री कृष्ण जी को, ईसाईयों के लिए ईसा मसीह को, मुस्लमानों के लिए मोहम्मद जी को हमने प्रवक्ता माना। आपके के नियमानुसार हिन्दुओं में गीता बोध करनेवाले को, ईसाईयों में बाइबिल ज्ञान बोध करनेवाले सारे लोग प्रवक्ता हैं पता चल रहा है। यही न !

उ :- सूत्रबद्धता से गीता बोध करनेवाले श्री कृष्ण जी को, तथा उस गीता को बोध के रूप में बोधन कर रहें मनुष्यों को समान रूप से प्रवक्ता कह सकते हैं। उसी तरह से बाइबिल ज्ञान बोध करनेवाले ईसा को, तथा बाइबिल बोध को बोधन करनेवाले बोधकों को समान रूप से प्रवक्ता कह सकते हैं। कहने मात्र से ही कृष्ण एवं गीता के बोधक समान नहीं हो सकतें। उसी तरह से यीशु, एवं बाइबिल बोधकजन समान नहीं हो सकते हैं। नमक और कपूर एक ही जैसा दिखलाई पड़ने पर भी, उनकी रूचियाँ अलग-अलग होती हैं। उसी तरह से श्री कृष्ण, गीता बोधक दोनों प्रवक्ता कहलाने पर भी, जिस प्रकार से पुरूषों में पुण्य पुरूष अलग होते हैं उसी तरह से प्रवक्ताओं में परमात्मा अलग, जीवात्मा अलग होकर रहते हैं। दैवज्ञान को बोध करनेवाला प्रवक्ता सूत्र दैवज्ञान को बोध करनेवाले सभी पर लागू होने पर भी, प्रवक्ताओं में मनुष्य अलग परमात्मा अलग हैं जानना चाहिए।

प्र :- क्या देवदूत प्रवक्ता नहीं हैं ?

उ :- देवदूत नामक शब्द आज हिन्दू मत(धर्म) में कहीं भी उपयोग में नहीं आ रहा है। कोई भी व्यक्ति देवदूत कहने के अलावा, देवदूत नामक शब्द का उपयोग नहीं कर रहे हैं। उसी तरह से दूसरे मतों(धर्मों) में प्रवक्ता शब्द का उपयोग कर रहे हैं, परन्तु हिन्दू मत(धर्म) में उपयोग नहीं किया जाता है। हिन्दू मत में कुछ ज्ञानीजन ही दूत. अवदूत नामक शब्दों का उपयोग कर रहे हैं। जिनकी मानसिक स्थिती ठीक नहीं रहती है, मतिभ्रम होकर, सनकी की तरह कपड़ों को फाड़ कर, घुमनेवालों को दूत, एवं अवदूत कहा जा रहा है। अब तुम्हारे प्रश्न का जवाब देते हैं, परमात्म ज्ञान को बोधन करनेवाला परमात्मा को भी प्रवक्ता कहते हैं जब, ज्ञान को बतानेवाले देवदूतों को भी प्रवक्ता ही कहना

चाहिए। देवदूत किसी समय में प्रवक्ता होते हैं लेकिन बाद में वे देवदूत ही हैं। अनेक हिन्दूओं को प्रवक्ताओं का विवरण हो, या देवदूतों के विषय में हो उन्हें इसकी जानकारी नहीं, कह सकते हैं। अब दूतों के विषय में कहें तो हिन्दू अवदूतों को मात्र ही जानते हैं। अवदूतों के विषय में भी सही-सही जानकारी न होने के कारण वस्त्रहीन नग्न शरीरों को अवदूत माना जा रहा है।

प्र :- क्या दिगंबर अवदूत नहीं हैं ?

उ :- हरगिज नहीं। दिगंबरों का अर्थ अलग होता है। अवदूत का अर्थ अलग होता है, जानना चाहिए। अवदूत अर्थात् समाचार को लेकर आनेवाला। अवदूत अर्थात् अवदि रहित या सीमारहित परमात्म ज्ञान को लेकर आनेवाला। परमात्मा सर्वत्र व्याप्त हैं। यहाँ तक परमात्मा मौजुद हैं सीमा रेखा तय कर कह नहीं सकतें। परमात्मा सर्वत्र व्याप्त होता है, इसलिए उस परमात्मा के समाचार को लानेवाले को अवदूत कहा गया। अवदूत अर्थात् परमात्मा के समाचार को पहुँचाने वाला इसी अर्थ के साथ बातें करना चाहिए। अब दिगंबरों की बातें करते हैं। दिगंबर अलग हैं और उनके कार्य अलग होते हैं। स्वभाविक रूप से वस्त्रहीन लोगों को दिगंबर कहना आदत बन गया है। वस्त्रों को न धारण करनेवालों को नग्न रूप में हैं, कहा जाएगा। ग्न का तात्पर्य छुपा कर रखना। न का तात्पर्य नहीं। नग्न अर्थात् छुपाकर न रखनेवाला। शरीर को छुपाने के लिए वस्त्रों को न धारण करनेवाला, तथा नग्न रहनेवाले को नग्न शरीरवाला कहा जाता रहा है। अब अंबर अर्थात् आकाश, अंबरों का तात्पर्य आकाश में विचरण करनेवाले, तेलुगु में दिग का अर्थ उतरना। दिगंबरों अर्थात् आकाश से धरती पर उतरनेवाले। आकाश से धरती पर उतरनेवाले ग्रहों, भूतों ऐसे अनेकों मनुष्यों के नजर में न आकर धरती पर घुमते रहने की बात यथार्थ है, किन्तु इस विषय से सब अनजान हैं, कह सकते हैं। हमने कई बार कहा है कि मनुष्यों को पीड़ित करने के लिए कभी-कभी कुछ भूतों, ग्रहों धरती पर उतर कर करनेवाले कार्यों को कर वापस लौट जाते हैं। इस प्रकार से आने-जानेवालों को पूर्व काल में दिगंबरों कहा करते थें। आज उस विवरण से अनभिज्ञ होने के कारण वस्त्र न धारण करनेवाले नग्न शरीरों को दिगंबर माना जा रहा है। अवदूत जो लोगों के लिए अनजान होता है, मनुष्यरूप में आकर

thraithashakam-36

परमात्म ज्ञान मनुष्यों को पहुँचा जाता है। दिगंबर कहलानेवाले ग्रहों, भूतों आकाश से अदृश्य रूप में आकर, अदृश्य रूप में रहकर समय आने पर मनुष्यों को दंड़ित कर जाते हैं। परमात्म ज्ञान को सूचित करनेवाला अवदूत, अवदूत के रूप में मालूम न पड़ कर, ज्ञान को सूचित करने के कारण सर्वप्रथम प्रवक्ता के रूप में मालूम पड़ता है। फिर भी वे ही अवदूत हैं कोई पहचान नहीं पाता है। धरती पर समाचार को सूचित करने के लिए आनेवालों में कभी-कभी साक्षात् भगवान भी अवतरित हो सकते हैं। परन्तु इन्हें फलाँ कहना संभव नहीं हो पाता है। कुछ और समयों में खगोल में ग्रहों हों, या भूतों हों ज्ञान को सूचित करने के लिए वें अदृश्य रूप में उन्हें ज्ञात ज्ञान को सूचित कर जाते हैं।

धरती पर परमात्मा ने अपने ज्ञान को तीन विधानों द्वारा सूचित किया। उन में से पहला वाणी द्वारा(आकाश वाणी) सूचित हुआ। दूसरा परदे के पीछे से अदृश्य रूप में कहना। तीसरा अपने दूत को भेजकर उनके द्वारा कहलवाना। इन तीनों विधानों में से दूत द्वारा कहलवाने को भगवान द्वारा कहलवाना समझना चाहिए। इसी विधान के अंर्तगत श्री कृष्ण के द्वारा भगवद् गीता कहलवाया गया। सृष्टि के आदि में वाणी द्वारा कहलवाया गया। परदे के पीछे से कहलवाना क़ुरआन ग्रंथ जब मोहम्मद प्रवक्ता को बताया गया था। जिब्राईल अदृश्य दूत (देवदूत) ने प्रवक्ता जी को बताया था। इस प्रकार से तीन विधानों द्वारा कहलवाया गया। इतना ही नहीं कभी भी परमात्म ज्ञान को धरती पर मनुष्यों को ज्ञात होना हो तो इन तीन विधानों द्वारा ही ज्ञात हो पाएगा।

प्र :- इस प्रपंच में इन तीन विधानों द्वारा ही ज्ञान ज्ञात होगा कहा गया, आपके पास इस बात का क्या कोई आधार है ?

उ :- हम कभी भी शास्त्र अधार रहित विषयों को नहीं कहता। पवित्र क़ुरआन ग्रंथ में ४२ वाँ सुरा, ५१ वाँ आयत में परमात्मा द्वारा सूचित तीन विधानों वाला ज्ञान का विधान ही सूचित किया गया। जो इस प्रकार से है। "किसी भी मानव के साथ परमात्मा प्रत्यक्ष रूप में संभाषण करना नमुमकिन है। व़ही द्वारा, या परदे के पीछे से, या दूत को भेजकर परमात्मा अपने

ज्ञान को सूचित करते हैं। आया हुआ दूत अल्लाह का आदेश का अनुसरण कर मनुष्यों द्वारा इच्छित संदेशों को पहुँचाता है। बेशक वे महाउन्नत, विवेकवान हैं।" इस प्रकार से परमात्मा ने अपने मूल ग्रंथों में बताया। इसे अपना ग्रंथ कहनेवाले मुस्लिम भाईयों में से कुछ लोगों को इस वाक्य का सही-सही अर्थ समझ में न आ सका। बेशक वे महाउन्नत, विवेकवान शब्दों का अंर्तभूत अर्थ से कुछलोगों आज भी वंचित हैं कह सकते हैं।

प्र :- परमात्मा सूचित तीन विधानों वाला ज्ञान बोध रूप में ही होगा न!

उ :- परमात्मा स्वयं नहीं बल्कि तीन पद्धतियों द्वारा ज्ञान को सूचित करवा रहे हैं। इस विषय में अनेक हिन्दूों को भी जानकारी नहीं है। किसी एक ग्रंथ में कहा गया विषय सब से संबंधित रखता है इस बात से अनजान होने के कारण कुरआन मुस्लिमों के लिए , भगवद् गीता हिन्दूओं के लिए माना जा रहा है। परमात्मा ने अपने ज्ञान को मनुष्य चाहे किसी भी मत (धर्म) में रह रहा हो तीन विधानों द्वारा सूचित किया। किसी भी विधान का उपयोग कर कहा गया हो , उनका पूरा ज्ञान बोध रूप में ही होता है सूचित हो रहा है। परमात्मा द्वारा सूचित बोध साधारण बोध जैसा नहीं होता है बल्कि वह मुख्य तथा शास्त्रबद्ध बोध होता है। उस बोध को "प्र" अक्षर से जोड़ कर प्रबोध कह सकते हैं। -प्र अक्षर विशेषता दर्शाता है। इसलिए ज्ञानी जन परमात्मा बोध को प्रबोध कहते हैं। प्रबोध को बोध करने वाले दूत को भी प्र अक्षर से जोड़ कर "प्रदूत" कहा गया है। प्रदूत द्वारा कहा गया प्रबोध तथा प्रज्ञान कह सकते हैं। "प्र" विशेष बात को सूचित करता है इसलिए , परमात्मा बोध को प्रबोध , परमात्मा ज्ञान को प्रज्ञान कहा गया है।

प्र :- भगवद् गीता को बोध करने वाले श्री कृष्ण जी प्रवक्ता हैं या नहीं ?

उ :- दैव ज्ञान को बोध करने वाले कोई भी हों सूत्रानुसार प्रवक्ता ही होंगे। श्री कृष्ण जी को भी प्रवक्ता कहा जाएगा हमने पहले भी कहा था। तात्कालिक वे प्रवक्ता कहलाने के बावजुद शाश्वत् रूप

से वे प्रवक्ता नहीं हैं। मनुष्यों को ज्ञान सूचित करने के लिए तीन विधानों में से परमात्मा द्वारा भेजा हुआ दूत श्री कृष्ण जी थे। श्री कृष्ण जी दूत होने के बावजुद , श्री कृष्ण जी भेजा हुआ होने के बावजुद भी, वास्तव में न ही उन्हें भेजा गया कहा जाएगा, न ही दूत कहा जाएगा। इस विषय को सत्यान्वेषण दृष्टिकोण से देखने के लिए एक उदाहरण लेंगे। राजा अकबर स्वयं आम नागरिक का भेष धारण कर राहगीर की भांति गाँव -गाँव घुम-घुम कर अपने पालन के बारें में जानकारी किया करते थे। राजा अकबर आम नागरिक का भेश धरण करने मात्र से ही उन्हें राजा अकबर मानने से इन्कार नहीं कर सकते हैं। नागरिक और राहगीर का रूप तात्कालिक था। अकबर शश्वत है। ठीक उसी तरह से श्री कृष्ण जी दूत के रूप में आना , उन्हें भेजना, यथार्थ में न ही वे दूत हैं , न ही भेजे गए हैं। वास्तव में दूत रूप में आने के बावजुद उन्हें परमात्मा ही कहेंगे। जिस प्रकार से आने वाला न ही आम नागरिक था न ही राहगीर था वे स्वयं राजा अकबर थे , उसी तरह से दूत के रूप में आने वाला, दूत के रूप में भेजा गया स्वयं परमात्मा ही हैं, कह रहे हैं।

इस प्रकार से आप कैसे कह सकते हैं , आपके पास क्या कोई आधार है यदि ऐसा कोई प्रश्न करता हो तो, इसका जवाब ऐसा है। परमात्मा की केवल खोज होती है पा नहीं सकते हैं। परमात्मा एक ही होता है। अगर उनके साथ दूसरा कोई रहता हो उन्होंने अपनी सेवा निमित्त किसी दूसरे को रखा हो तो उन पर परमात्मा नाम लागू नहीं होगा। क्योंकि पास वाले को उनकी जानकारी हो सकती है। तथा दूसरे के द्वारा उनका पता अन्य लोगों को मालूम पड़ जाएगा। और सुलभता से परमात्मा किसी को भी प्राप्त हो सकते हैं तथा वे सब देख सकते हैं। अब तक परमात्मा किसी के नजर में न आकर रहस्य या गुप्त होने का तात्पर्य है कि उन्होंने कभी किसी पर भी विश्वास कर, उसे अपना सेवक नियुक्त नहीं किया। ईश्वर की जितनी भी प्रशंसा करो वे कभी भी धोखा नहीं खा सकते हैं। इस प्रपंच में यदि कोई भी व्यक्ति ईश्वर का अत्यंत सन्निहित भक्त रहा हो , उस भक्त पर भी विश्वास कर उसे अपने पास नहीं रखा। अगर कोई पुछें कि ईश्वर मनुष्यों के प्रति इतने सावधान क्यों हैं, तो इस बात का जवाब ईश्वर कुछ इस प्रकार से देंगे। “आप सब मनुष्य हो, और मैं ईश्वर

हूँ इसलिए, आप सब व्यक्त रुप में हो , और मैं अव्यक्त रूप में हूँ इसलिए , आप सब पैदा हुए हैं, और मैं पैदा नहीं हुआ इसलिए , आप के अव्यव हैं , मेरे नहीं हैं इसलिए , आप के कर्म हैं, और मेरे कर्म नहीं हैं इसलिए," ऐसे अनेकों जवाब दे सकते हैं बिना छोड़े।

इन सब बातों पर गौर करें तो ईश्वर के पास कोई भी नहीं हैं। वे एकाकी हैं। इस कारण मैं मेरा दूत भेज रहा हूँ मेरा दूत मेरा ज्ञान बोध करेगा मेरे ज्ञान को जानने वाला उनके बातों में सत्यता को जान सकता है। उनके पास कोई नहीं हैं इसलिए वे ही स्वयं धरती पर आए हैं समझ सकेगा। उन्हें कोई न पहचान पाए इसलिए परमात्मा ने ऐसा कहा है, जो ज्ञानी होगा समझ जाएगा। जो समझदार होगा वह ही परमात्म ज्ञान में रहस्यों अथवा मर्म को जान पाएगा। तब तक समझ में न आकर गलत राह में भटकने की संभावना होने पर भी ज्ञान के सारे संशय दूर होते चले जाऐंगे। और वह अल्प काल में ही परमात्म ज्ञान को , तथा रहस्यों को जान कर परमात्मा के आश्रय में पहुँचेगा। जिसे हम मोक्ष या परम पद कह सकते हैं।

प्र :- अब तक अपने जो भी कहा उस पर विश्वास कर सत्य ही कह रहे हैं , हमने मान लिया। लेकिन अब आपकी बातों पर शंका हो रही है। इसका कारण यह है कि आपने कहा था कि अब तक परमात्मा के पास कोई नहीं हैं। कम से कम एक आध लोग भी नहीं हैं। ईश्वर मनुष्यों पर न ही विश्वास करते हैं और न ही आश्रय देते हैं आप कह रहे हैं। हम आपके बातों को सुनते आए हैं। और अब आपकी बातें से हम लोगों में संशय उत्पन्न हो रहा है। परमात्मा के बारें में जानने वाला व्यक्ति मोक्ष की प्राप्ति कर परमात्मा के आश्रय में चला जाता है अभी-अभी आपने बताया। मुक्ति को प्राप्त करने वाला परमात्मा के सन्निधान को पाकर जन्म रहित हो जाना अन्य लोगों को कहते हुए भी हमने सुना था। यदि मान लें कि परमात्मा किसी को भी आश्रय नहीं देता है। जबकि मनुष्य मोक्ष प्राप्त कर परमात्मा के सन्निधान में ही जाता है न ! इसे आप क्या कहेंगे। इस बात का आप क्या जवाब देंगे ?

thraithashakam-36

उ :- आप सही समय पर सही प्रश्न पुछ कर मुझे उलझन में ड़ालने की कोशिश कर रहे हैं। कोई बात नहीं। ऐसे प्रश्नों का ही मैं कामना करता हूँ। आपके पुछे हुए प्रश्न का जवाब इस प्रकार से है। सम्पूर्ण ज्ञान को जानने वाला जब अपने कर्म से रहित हो जाता है तो वह मोक्ष को प्राप्त कर ईश्वर के सन्निधान को पा लेना बिलकुल सत्य वचन है। दरअसल परमात्मा अपने पास आने वाले को देखकर यह व्यक्ति मेरे साथ में रहना ठीक न होगा सोच कर , वहाँ जाने वालों का नाक कान काट कर, रूप रहित बनाकर, हाथ पैरों को तोड़ चलन रहित कर, मैं एक जीवात्मा हूँ स्मृति में न रह सके सिर पर मार कर, अंततः अपने जैसा निराकार बना कर, रूप नाम क्रिया रहित बनने के बाद अपने में लीन कर लेते हैं। और तब मोक्ष प्राप्त करने वाला परमात्मा से बाहर रहित होकर , परमात्मा के अन्दर परमात्मा की भांति रह जाते हैं। वे ही आप , आप ही वे, होने के बाद सब एकक होकर रह जाते हैं, उन (परमात्मा) से अलग कोई नहीं होता है। इस प्रकार से कोई भी , कितने भी लोगों को मोक्ष की प्राप्ति हो सब परमात्मा में लीन हो जाते हैं। दो कहने की गुंजाइश ही नही रहती एकक में बदल जाते हैं। इस कारण वहाँ कोई नहीं होता है दूत के रूप में कोई नहीं हो सकता। नाम बदल कर दूत के रूप में आने वाला परमात्मा ही होता है। इसमें किसी भी तरह का कोई संदेह नहीं है।

परमात्मा अपने मूल ग्रंथ क़ुरआन में, जब कोई ज्ञान वाक्य बताया जाता है तो उस वाक्य के अंत में कोई एक चिन्ह को रख जाते हैं। यही क़ुरआन की उत्कृष्टता है। ४२ वाँ सुरा ५१ वाँ आयत के अंत में एक बात कहा गया। वहाँ उन्होंने बताए तीन विधानों में से तीसरे विधान में अपने दूत को भेज कर ईश्वर की आज्ञानुसार दूत द्वारा इच्छित ज्ञान को सूचित किया जाएगा ऐसा कहा गया। इस वाक्य को यहीं पर समाप्त न कर "बेशक वह बुलन्दी व हिकमत वाला है" ऐसा कहा गया। वहाँ कहा गया उस वाक्य को जिब्राईल ने परदे के पीछे से अदृश्य रूप में कह रहे थे उसे मोहम्मद प्रवक्ता जी सुन रहे थे। उस समय में जिब्राईल ने किसे उद्देश्य में रख कर बेशक वह बुलन्दी व हिकमत वाला है कहा यदि प्रश्न कर देखें तो सारा मुस्लिम समाज दूत को भेज कर अल्लाह ने अपने बारें में ज्ञान सूचित किया ऐसा जिब्राईल ने कहा कह रहे हैं। वहाँ उन परिस्थिति

के अनुसार सब लोग वैसा विचार करने की गुंजाइश होने पर भी , जिब्राईल सृष्टादि से ही परमात्मा की सेवा में रह कर परमात्म ज्ञान को सम्पूर्ण रूप ले ज्ञात किया इसलिए , जिब्राईल ने हमलोगों के सोच के मुताबिक उन्होंने नहीं कहा था बल्कि वहाँ उन्होंने दूत के बारें में कहा, जो आए थे पता चल रहा है। परमात्म ज्ञान का ज्ञाता परमात्मा को छोड़ कर परमात्मा द्वारा भेजा हुआ दूत की प्रशंसा करेगा यह प्रश्न लोगों के मन में उठ सकता है। इसका जवाब यह है कि यहाँ पर अच्छी तरह से गौर करें तो, अदृश्य रूप में परदे के पीछ से कहा महाज्ञानी जिब्राईल ने , उन्होंने अर्जित ज्ञान के अनुसार दूत के रूप में आए व्यक्ति को "बेशक वे बुलन्द व हिकमत वाला है" कहा था। अल्लाह को हिकमत वाला व बुलन्दी कहने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि प्रत्यक्ष दूत के रूप में आया मनुष्य से लोगों के साथ तुलना कर , उन लोगों की अपेक्षा इन्हें विवेकवान सूचित करने निमित्त , दूत को उद्देश्य में रख कर हो सकता कहा होगा। उसी तरह से नीच एवं उन्नत कहते समय, नीच मनुष्यों के साथ मनुष्य रूप में दूत की तुलना करते समय, दूत को बुलन्दी (महा उन्नत) कहा होगा। अप्रत्यछ परमात्मा के साथ प्रत्यक्ष मनुष्यों की तुलना करने की आवश्यकता नहीं रही होगी। क्योंकि परमात्मा का मनुष्यों की तरह न ही सिर होता है न ही उसके अन्दर बुद्धि रहती है। ऐसे में उन्हें सबसे अधिक हिकमत वाला(विवेकवान) कहने की गुंजाइश नहीं बचती। इतना ही नहीं ईश्वर कितने उत्कृष्ट हैं कोई नहीं जानता। वैसे में मनुष्यों के साथ तुलना कर विवेकवान कहना मुमकिन नहीं है। इस प्रकार से जिन्होंने परमात्मा को नहीं देखा, उस परमात्मा का अन्य लोगों के साथ तुलना कर कहना नमुमकिन है। इस वजह जिब्राईल ने अल्लाह के बारें में कुछ न कह कर , वहाँ पर मौजुद दूत के बारें में मात्र ही कहा सूचित हो रहा है। दूत के बारें में विवेकवान , महा उन्नत कहना बिलकुल अनुकुल है। इस प्रकार कुरआन में वाक्यों को सही ढ़ंग से समझा जाए तो उसका यथार्थ ज्ञान समझ में आएगा।

जिब्राईल सृष्टादि से ही खगोल में परमात्मा पालन में मौजूद एक ग्रह है। ग्रह को कम आंकना नहीं चाहिए। जिब्राईल ग्रह रूप में मौजूद सम्पूर्ण ज्ञानी हैं , जानना चाहिए। परमात्मा पालन

में रहने वाला जिब्राईल को भी परमात्मा का सेवक कह सकते हैं। परमात्मा का सेवक परमात्मा की तरफ से कार्य कर रहा है इसलिए उन्हें (जिब्राईल) परमात्मा का दूत कह रहे होंगे। परन्तु उन्हें अल्लाह द्वारा भेजा हुआ दूत कहना नहीं चाहिए। जिब्राईल दूत नहीं हो सकते , क्योंकि जब कभी भी दूत आता है तो वह परमात्मा का प्रतिनिधि बन कर आता है समझना चाहिए। शरीर को धारण कर आने वाले को परमात्मा नहीं कहना चाहिए। शरीर को धारण कर आने वाले को दूत , अवदूत कह सकते हैं। माता के गर्भ से (भग से) जन्म लेकर आया इसलिए, उन्हें भगवान कहा गया। परमात्मा स्वयं अवतरित होते हो तो उन्हें दूत , अवदूत, भगवान, कहा जाता है। जिब्राईल केवल परमात्मा के ज्ञानी है परमात्मा नहीं। इसलिए अदृश्य जिब्राईल को परदे के पीछे से कहने वालों में गणना कर रहे हैं। लोगों को दिखलाई पड़ते हुए ज्ञान बोध करने वाले श्री कृष्ण जी को दूत कह रहे हैं।

प्रत्यक्ष रूप में दैवज्ञान बताने वाला दूत मनुष्य है। उसको सिर है, सिर में अपरिमित बुद्धि है। इसलिए दूत रूप में आए परमात्मा कोई सामान्य व्यक्ति नहीं हैं जान कर जिब्राईल ने, अपने बोध में दूत को बेशक वह बुलन्दी व विवेकवान बताया। इस प्रपंच में परमात्मा सर्वप्रथम हैं तो , परमात्मा का प्रतिनिधि दूत दूसरा होता है। अप्रत्यक्ष परमात्मा, प्रत्यक्ष परमात्मा का दूत (अवदूत) कह सकते हैं। धरती पर परमात्मा से बढ़ कर महा उन्नत दूसरा कोई नहीं है। इसलिए महा उन्नत परमात्मा के दूत के बारें कहा गया। महा उन्नत तथा विवेकवान परमात्मा के बारें में कहना धर्म के विरूदध होता है। परन्तु परमात्मा के दूत के विषय में कहना गलत नहीं है। क़ुरआन ग्रंथ में परमात्म बोध तीन प्रकार से धरती पर मनुष्यों को सूचित होगा कहा गया दूसरे विधान में अप्रत्यक्ष रूप में परदे के पीछे से कहने वाले जिब्राईल थे जिब्राईल दूत नहीं थे , जो दूत होता है उसे तीसरे किस्म का बोधक समझना चाहिए। दूत ही असल में ईश्वर का रूप है, यह बात जानकर जिब्राईल ने , दूत के बारें में ही महा उन्नत, विवेकवान कहा था।

प्र :- क़ुरआन ज्ञान को मोहम्मद प्रवक्ता जी से सर्वप्रथम कहने वाले जिब्राईल अदृश्यरूप में थे तो , उन्हें क्या कहना चाहिए। अगर मोहम्मद जी प्रवक्ता हैं तो, जिब्राईल क्या हैं ?

उ :- क़ुरआन को मोहम्मद जी से कहने वाले जिब्राईल हो , या उसे सुन कर प्रजा को बोध करने वाले मोहम्मद जी हो दोनों को सुत्रानुसार प्रवक्ता ही कहना चाहिए। जबकि जिब्राईल जी खगोल में एक ग्रह, तथा मोहम्मद जी धरती पर निवास एक मनुष्य थे। जिब्राईल जी सृष्टादि से मौजुद हैं , जब तक सृष्टि रहेगी मौजुद रहेंगे। मोहम्मद प्रवक्ता आने से पूर्व, तथा मोहम्मद प्रवक्ता जाने के बाद भी जिब्राईल मौजुद हैं। परमात्म पालन में जिब्राईल जी एक हैं। परमात्म ज्ञान को सम्पूर्ण रूप से जानने वाले ज्ञानी हैं। मोहम्मद जी क़ुरआन ज्ञान को कहने के कारण प्रवक्ता होने के बावजुद , वे एक साधारण मनुष्य थे। हम लोगों की तरह जनन -मरणों, तथा कष्ट -सुखों को अनुभव करने वाले एक व्यक्ति थे मोहम्मद जी, जानना चाहिए।

प्र :- अनेक मुसलमान भाईयों को प्रवक्ता अच्छी तरह ले ज्ञात हैं किन्तु जिब्राईल कौन है कोई नहीं जानता। प्रवक्ता को ज्ञात क़ुरआन अल्लाह के पास से आया देवसंदेश कह रहे हैं। आपका क्या कहना है ?

उ :- अल्लाह के पास से आया दैव संदेश को वाणी या व़ही कहा जाता है। मोहम्मद प्रवक्ता जी को जो क़ुरआन संदेश सुनाई पड़ा था वह अल्लाह के पास से आया हुआ नही था। नीचे उनके सामने अदृश्य रूप में जिब्राईल द्वारा कहा गया क़ुरआन ग्रंथ में हैं , सूचित हो रहा है। ऊपर से आए ध्वनि या वाणी को, परमात्मा द्वारा कहा गया ज्ञान प्रथम विधान द्वारा ज्ञान का प्रचार था जान सकते हैं। क़ुरआन में अल्लाह ने ४२ वाँ सुरा , ५१ वाँ आयत में सूचित के अनुसार ज्ञान परदे के पीछे से कहा गया दूसरे विधान द्वारा ज्ञान का प्रचार था , सूचित हो रहा है। इसलिए क़ुरआन अल्लाह द्वारा बताया गया दूसरे विधान द्वारा ज्ञान का प्रचार था, मालूम होना चाहिए।

प्र :- क़ुरआन ग्रंथ में परमात्म ज्ञान धरती पर मनुष्यों को तीन विधानों से बोध किया गया है न ! उन तीनों विधानों में पहला वाणी (व़ही) द्वारा कहा गया , दूसरा परदे के पीछे से कहा गया , तीसरे विधान में दूत द्वारा कहा गया है न ! इन तीनों विधानों में से कौन सा विधान उत्तम है !

उ :- धरती पर मनुष्यों का लिए बोध किया गया परमात्म ज्ञान किसी भी विधान से हो श्रेष्ठ ही होता है। ज्ञान ज्ञात होना ही श्रेष्ठ बात होता है। इसलिए सभी विधानों को श्रेष्ठ कह सकते हैं। तीनों विधानों में से कौन सा श्रेष्ठ है, कौन सा नहीं कहना नमुमकीन है। अब अच्छी तरह से विचार करेंगे। पहले विधान में वाणी द्वारा ज्ञान को सूचित किया गया। वाणी अर्थात् ध्वनि। परमात्म ज्ञान ध्वनि द्वारा सुनाई पड़ा था जब, वह ध्वनि कहाँ से आ रही है प्रश्न उठता हो तो , ध्वनि आकाश से उत्पन्न होना ज्ञात होता है। परमात्म की सृष्टि तीन भागों में हैं। भूतों , ग्रहों, तथा जीव राशियों (प्राणियों)। महाभूत पाँच हैं। १)आकाश २) वायु ३)अग्नि ४)जल ५)भूमि। इन पाँचों को प्रकृति एवं पंच महाभूत भी कहा जाता है। परमात्म ज्ञान वायु द्वारा ध्वनि रूप में आना , उस ध्वनि में ज्ञान पैदा होना ज्ञात होता है। आकाश शून्य है , शून्य से उत्पन्न ज्ञान वायु द्वारा ध्वनि रूप में सर्वप्रथम सूर्य ग्रह को सुनाई पड़ा। प्रपंच में सर्वप्रथम दैव ज्ञान सूर्य ने जाना , उसी ज्ञान को जानने वाला दूसरा ग्रह था जिब्राईल। दैवज्ञान को जानने में पहला सूर्य ग्रह था , दूसरा जिब्राईल थे। जबकि सूर्य ने पहले पहल धरती पर मनु नामक व्यक्ति को सूचित किया। मनु द्वारा अन्य मनुष्यों को मालूम पड़ा। इन सब बातों पर ध्यान दें तो भूतों , ग्रहों, मनुष्यों इन तीन जातियों में से सर्वप्रथम भूतों को ज्ञात होने के बाद ज्ञान ग्रहों को ज्ञात हुआ, ग्रहों द्वारा धरती पर मनुष्यों को मालूम पड़ा।

प्रकृति भाग आकाश से आरम्भ हुआ ज्ञान, अंततः मनुष्यों तक पहुँचना एक राह जैसा गोचर हो रहा है। इस विधान को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। वह इस प्रकार से है। परमात्मा से मनुष्यों के लिए सूचित ज्ञान तीन विधानों में से , वाणी द्वारा सूचित करना पहला विधान सूचित हो रहा है। परदे के पीछे से सूचित करना दूसरा विधान समझ सकते हैं। एक विधान द्वारा परमात्मा द्वारा सृष्टि हुए ग्रहों के समुह को ज्ञान ज्ञात हुआ , दूसरे विधान द्वारा ग्रह से धरती पर मनुष्यों को ज्ञात हुआ। आकाश से सूर्य ग्रह को ज्ञात होना एक विधान होता हो तो , सूर्य ग्रह से मनुष्यों को ज्ञात पड़ना दूसरा विधान हुआ। आकाश में स्थित ग्रहें अपने स्थूल को छोड़ कर , सूक्ष्म रूप में धरती पर आते हैं जब, वे किसी को नजर नहीं आते हैं। उस प्रकार से अदृश्य रूप में, मनुष्यों

की जानकारी की भाषा में कहने को परदे के पीछे से कहना , कहते हैं। परदे के पीछे से अर्थात् कहने वाला सामने होते हुए भी नजर न आना। उसी तरह से जिब्राईल ने भी कहा था। सूर्य कथित भगवद् गीता बना, तथा जिब्राईल कथित क़ुरआन बना। जबकि सूर्य कथित ज्ञान ही जिब्राईल ने भी कहा था। सूर्य को ज्ञात ज्ञान ही जिब्राईल को भी ज्ञात था। इसलिए सूर्य कथित ज्ञान , तथा जिब्राईल कथित ज्ञान दोनों को एक ही ज्ञान हैं कहा जाएगा।

मुख्य रूप से समझने वाली बात यह है कि सूर्य ने मनु को दैनज्ञान बोध करते समय दैवज्ञान का नाम भगवद् गीता नहीं था। उसे परमात्मा ज्ञान ही कहा गया। ठीक उसी तरह से जिब्राईल ने पहले मोहम्मद जी से दैवज्ञान कहते समय दैवज्ञान का नाम क़ुरआन नहीं था। उस दिन जिब्राईल ने उनके कहे ज्ञान को परमात्मा ज्ञान समझ कर कहा था। मनुष्यों को ज्ञात ज्ञान को जब ग्रंथ रूप में लिखा गया तब सूर्य कथित ज्ञान को भगवद् गीता , तथा जिब्राईल कथित ज्ञान को क़ुरआन नाम रखा गया। भगवद् गीता तथा क़ुरआन दोनों ग्रंथ आज हम सब के सामने होते हुए भी, दोनों में कथित एक ही ज्ञान को हम पहचान नहीं पा रहे हैं। इसका कारण आज हम लोगों के मन में घर कर गया संकुचित भाव ही है।

अब तक हम ने दो विधानों के बारें में बातें की। परमात्मा ज्ञान धरती पर मनुष्यों को जानने का लिए दोनों विधानों में महाभूतों अर्थात् प्रकृति की भूमिका कुछ , तथा ग्रहों की भूमिका कुछ रही है, समझ में आया। इन दोनों विधानों के अलावा मूल ग्रंथों में एक और विधान के बारें में बताया गया है। तीसरे विधान में दूत को भेज कर दूत के द्वारा अपने ज्ञान को सूचित करने की बात कही गयी है। अभी दूत के विषय में मुख्य रूप से हमें जानने की आवश्यकता है। दूत न ही भूतों (प्रकृति) द्वारा आया, और न ही ग्रहों द्वारा आया। दूत न ही प्रकृति में भूत है न ही ग्रहों में ग्रह है और न ही जीवों में जीव। विस्तार से बातें करें तो ईश्वर की सृष्टि को तीन भागों में कह सकते हैं। पहला भूतों , दूसरा ग्रहों, तीसरा जीवों। इन्हें विभाजित करें तो भूतों दो प्रकार के , ग्रहों दो प्रकार के , सारे जीव एक ही प्रकार के हैं। पाँच विभाजित भागों में मौजुद सृष्टि को मुख्य रूप से भूतों , ग्रहों, और जीवों

को मिला कर तीन भाग कह सकते हैं। फिर भी मनुष्य परमात्म ज्ञान को न जान पाया। पहले बताए हुए दोनों विधानों में भूतों द्वारा ग्रहों को एक विधान हुआ , ग्रहों द्वारा जीवों को दूसरा विधान हुआ। अब हम बताने जा रहे तीसरे विधान में एक दूत की भूमिका के अलावा न ही भूतों की भूमिका के बारें में है, न ही ग्रहों की भूमिका के बारें में हैं।

दूत द्वारा जीवों को परमात्म ज्ञान धरती पर अब तक ज्ञात हो चुका है। इसलिए उस विधान को विश्लेषण कर देख पाए तो, हमें एक नया विधान समझ में आएगा। मूल ग्रंथों में कहा गया है कि अपने दूत द्वारा ज्ञान कहलवाया जाएगा। अब मुख्य प्रश्न आता है कि वह दूत कौन है। दूत न ही भूत है, न ही ग्रह है। हम सब से प्रत्यक्ष रूप में बातें करने वाला हमलोगों के जैसा ही मनुष्य होना विशेष बात है। फिर भी उस दूत की पहचान करना किसी के लिए भी संभव नहीं हो सका। इसका मुख्य कारण है दूत एक साधारण मनुष्य के रूप में रहना। दूत एक साधारण व्यक्ति है या नहीं इस विषय के बारें में हमने पहले भी चर्चा की थी। दूत और कोई नहीं, बल्कि रूप बदल कर आए परमात्मा ही हैं सिद्ध हो चुका है। कुछ लोग अर्थात् कई मतों(धर्मो) में लोगों का मानना है कि परमात्मा जन्म नहीं लेते हैं। हम भी यही कहते हैं परमात्मा जन्म नहीं लेता है। परमात्मा, परमात्मा के रूप में जन्म नहीं लिया। भेष बदल कर दूसरे रूप में, दूसरे नाम से, जन्म लेते है कह रहे है। नाम बदल कर, रूप बदल कर पैदा होना कई आधार मिलेंगे। जो इस प्रकार से है। भगवद् गीता में राजविद्या राजगुह्य योग में ११ वाँ श्लोक में भगवान ने इस प्रकार कहा।

श्लोक: "अवजानन्ति मां मुढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परंभावमजानन्तो मम् भूतमहेश्वरम् " ।।

भावः- " समस्त जीवों अर्थात् प्राणियों का मैं परमात्मा, मेरा मानव शरीर को धारण कर धरती पर आना, मनुष्यरुप में लीला करते हुए मुझे देख कर मूढ मनुष्य मेरी श्रेष्ठता को न जान कर, मैं सबका अधिपति हूँ न समझ कर मेरा निरादर कर रहे हैं।"

भगवद् गीता में ज्ञान योग ६ वाँ श्लोक...

" अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया"

भावः- मैं ईश्वर न ही मैं नश्वर हूँ, न ही मेरा(ईश्वर रूप में) जन्म होगा। समस्त जीवों का नियमन करनेवाला ईश्वर हूँ मैं, माया के साथ मिलकर मुझे कोई पहचान न सकें भगवान रूप में, मैं साधारण मनुष्य का शरीर धारण कर जन्म लूँगा।

इस प्रकार से भगवद् गीता में ईश्वर भगवान के रूप में अवतरित होना कहा गया, पवित्र क़ुरआन ग्रंथ में ८९ वाँ सुरा में २२ वाँ आयत में "जब तेरा रब अवतरित होंगे तब सारे देवदूत अर्थात् फरिश्तें कतार-कतार में खड़ें होंगे" ऐसा जिब्राईल ने कहा था। बाइबिल में भी परमात्मा धरती पर अवतरित होंगे कहा गया। भगवद् गीता में स्पष्ट रूप में कहा गया है कि मैं ईश्वर मनुष्य रूप में अवतार लूँगा। परमात्मा, परमात्मा रूप में धरती पर कभी भी नहीं आऐंगे, किन्तु परमात्मा दूसरे रूप के साथ अर्थात् दूत या भगवान बन कर आऐंगे कह सकते हैं। तब भी खुद को मैं दूत हूँ, भगवान हूँ कहीं भी प्रकट नहीं करेंगे। और न ही कोई पता लगा पाएगा कि परमात्मा धरती पर अवतरित हुए हैं। इस कारण परमात्मा मनुष्य रूप में धरती पर आकर स्वयं ज्ञान सूचित कर जाऐंगे, उनका आना, और जाना कोई नहीं जान पाएगा। भगवद् गीता में मैं कितनी बार आया हूँ ज्ञान योग पाँचवे श्लोक में कहा गया किन्तु उस विषय को कोई भी ग्रहण न कर परमात्मा न ही मनुष्य रूप में आऐंगे, न ही अवतार लेंगे, कह रहे हैं। उस प्रकार के लोगों के लिए भगवद् गीता में राजविद्या राजगुह्य योग में ११ वाँ श्लोक में, ज्ञान योग में ६ वाँ श्लोक में कहा गया। इतना ही नहीं परमात्मा

धरती पर किस कार्य निमित्त आऐंगे उस कार्य का विवरण करते हुए ज्ञान योग में ७, ८ श्लोक में इस प्रकार से कहा गया...

७) श्लोक:- यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।

८) श्लोक:- परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ।।

भाव:- "धर्म की जब-जब हानि होती है और अधर्म का अभ्युथान अर्थात् उन्नति होती है, तब-तब मैं अपने आपको मनुष्य रूप में रच कर धरती पर जन्म लूँगा।"

"इस प्रकार मैं मानव रूप में जन्म लेकर धर्मों को सूचित कर अधर्मियों की संख्या को कम करूँगा। धर्मों को सूचित करने निमित्त, युग युग में अर्थात् किसी भी युग में हो मैं धरती पर आऊँगा।"

ऊपर श्लोक में कहा गया कि मैं धरती पर आकर आपको ज्ञान बताऊँगा, दूत द्वारा ज्ञान सूचित करूँगा भी कहा। गीता में मैं मनुष्यरुप में आकर धर्मों(परमात्म ज्ञान) को सूचित करूँगा बात को घुमा-फिरा कर न कह कर सीधे कहा। उनकी, मेरे दूत द्वारा परमात्म ज्ञान सूचित करूँगा १४ सौ वर्ष पूर्व कही हुई बात न ही किसी को समझ में आया। और न ही मैं ही आकर ज्ञान को, धर्म को सूचित करूँगा पाँच हजार वर्ष पूर्व कही हुई बात मनुष्यों को समझ में आ सका। लोग, परमात्मा धरती पर अवतरित नहीं होंगे, परमात्मा छः आसमानों के पार सातवें आसमान में है, कह रहे हैं। लोग इस बात से अनजान हैं कि स्थूल रूप में सात नहीं बल्कि एक ही आसमान है, सात आसमानों का सूक्ष्म अर्थ ग्रहण न कर पाने की वजह से, स्थूल रूप में ही ऊपर सात आसमानों को होना माना जा रहा है।

परमात्मा, मैं धरती पर मनुष्यों के लिए ज्ञान तीन विधानों द्वारा सूचित करूँगा, कथित वाक्य के अनुसार भूतों, ग्रहों को वाणी द्वारा सूचित करना एक विधान हुआ, ग्रहों मनुष्यों को अदृश्यरूप में परदे के पीछे से सूचित करना दूसरा विधान हुआ। परमात्मा पालन के कारण ये दोनों विधान हुए हैं, कह सकते हैं। तीसरे विधान में स्वयं परमात्मा ही दूत रूप(भगवान) में आकर कहना विशेष बात है। उनके पालन में मौजुद भूतों, ग्रहों को परमात्मा के सेवक बन कर, परमात्मा के कार्य को करने वालों में गणना कर कह सकते हैं। परमात्म ज्ञान धरती पर उनके सेवकों द्वारा ही पहुँचाया जाता है। जिस प्रकार किसी दूर प्रांत से माल को वाहनों द्वारा गम्यस्थान पहुँचाया जाता है, उसी तरह प्रजा को कहीं दूर में विद्यमान ज्ञान को भूतों, एवं ग्रहों द्वारा मनुष्यों तक दो विधानों द्वारा पहुँचाया गया। मनुष्यों के समक्ष माल को तैयार करके उन्हें देना एक विशेष विधान है। मनुष्यों के पास परमात्मा मनुष्य रूप में आकर, उस समय की आवश्यकतानुसार ज्ञान को बोध करना विशेष विधान होता है।

इससे सिद्ध होता है कि मनुष्यों के मध्य परमात्म ज्ञान दो विधानों द्वारा पहुँचाया गया है। पहला अप्रत्यक्ष ग्रहों द्वारा, दूसरा प्रत्यक्ष मनुष्य रूप में परमात्मा द्वारा कह सकते हैं। यह प्रक्रिया कई हजारों वर्षों या कई लाखों वर्षों में एक बार होता है। इस प्रक्रिया से ज्ञान धरती पर सूचित होने के बाद कई हजारों वर्षों तक मनुष्यों में कई लोग बोधक बन कर प्रजा को बोध करते हैं। बोधक जन खुद को बोधक मान कर बोध कर रहे ज्ञान, समय व्यतीत होने के साथ ही परमात्मा कथित बातों का अर्थ, और भाव पूर्णतः बदल कर धर्म अधर्म में बदलते चले जाएेंगे। बदले हुए धर्मों को सही करने हेतु परमात्मा ग्रहों द्वारा कहलवा सकते हैं, या वे स्वयं ही आ सकते हैं। जब परमात्मा मनुष्यरूप में(भगवानरूप में) अवतरित होंगे, धरती पर रह कर उनके द्वारा स्वयं ही ज्ञान को ज्ञात करने वाले लोगों को, यथार्थ में भाग्यशाली कह सकते हैं। जबकि आनेवाला, कहनेवाला कौन हो सकता है अनभिज्ञ होने के कारण मनुष्य उन्हीं के जैसा(मनुष्यरूप में) परमात्मा, कई समयों में निरादर किए जाएेंगे। यथार्थ में उन लोगों का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा। धरती पर दैवज्ञान पूर्ण रूप से अज्ञानता में डुबा हुआ है, जब सारे बोधकजन अधर्मों को कर रहे होते हैं, तब कुछ ही संदर्भों में

परमात्मा स्वयं ही धरती पर आकर अपने ज्ञान को सूचित करेंगे। और तब तक बोध कर रहे सारे बोधकजन, अज्ञानता को ज्ञान बताकर बोध करनेवालों को, इन्दू धर्मों का नाम बताकर हीन धर्मों को बोध करनेवाले सारे बोधकों को, एक मानव गुरू परंपरा से दूर, गुरू पीठ से संबंधित न रहनेवाला आकर, उनके विपरीत ज्ञान को बोध करना सहन न करनेवाले कुछ लोग, मनुष्यरूप(भगवान) लेकर आए व्यक्ति के विरोध में बातें करना, व्यथित(तंग) करते रहेंगे। वैसे लोगों के बारें में ही मेरी श्रेष्ठता को न जान कर मूढ लोग मेरी अवज्ञा करेंगे भगवद् गीता में राजविद्या राजगुह्य योग में ११ वाँ श्लोक में कहा गया। परमात्मा स्वयं ही धरती पर आने पर भी, आने का कोई आधार नहीं मिलेगा। इसलिए अधिकाशं लोगों को गलतफहमी होने की संभावना बनी रहती है। लोग गलतफहमी में न पड़ सकें मनुष्यरूप में आनेवाला, मनुष्य न होते हुए भी मनुष्यरूप में रहने वाला व्यक्ति द्वारा सूचित ज्ञान को श्रद्धा पूर्वक ग्रहण करने वाले लोग धन्य होते हैं। उन अच्छे दिनों में उन से बातें करनेवाले लोग, उनकी सेवा में भाग लेने वाले लोग, उनका दर्शन करने वाले लोग, इस बात से वे बेखबर हैं कि अनजाने में ही उन्होंने अच्छा भाग्य पाया। करोड़ों लोगों में केवल उन्हें ही अवसर प्राप्त होना वे पूर्ण रूप से भाग्यशाली ही हैं। फिर भी इस बात को जानना किसी के लिए भी संभावना नहीं है। परमात्मा के जन्म के बारें में जानकर खुद को भाग्यशाली मानने वाला, उनके हाथों में अपनी मृत्यु की कामना करने वाला, अपने अंतकाल में भी उन्हे ही देखने इच्छा रखने वाला, आप मुझे मोक्ष प्रदान कीजिए भगवान वेश धारण किए हुए परमात्मा से कामना करने वाला इतिहास में केवल भीष्म ही थे, भूलना नहीं चाहिए।

इतने सारे विशेषताओं से युक्त दूत द्वारा ज्ञान कहलवाऊँगा परमात्मा ने कहा। उस विधान को श्रेष्ठ कहा जाएगा। दूत शब्द सेवा करनेवालों के प्रति, उनके कार्यों को करनेवालों के प्रति, उनके संदेश को ले जाकर अन्य को पहुँचाने वालों के प्रति उपयोग में लाने के कारण, यहाँ ज्ञान बोध करनेवाले दूत को भी एक कार्य करनेवाला नौकर के रूप में कई लोग मान रहे हैं। इस तरह की कोई गलतफहमी न हो सके दूत का मतलब किस प्रकार के दूत हैं समझना चाहिए। ८९ सुरा २२ वाँ

आयत में देवदूत अर्थात् फरिश्तें कतार-कतार में होंगे जब तेरा रब अवतरित होगा कहा गया है न! वहाँ दूतों को उनके सेवक समझना चाहिए। इस प्रकार से संदर्भ के अनुसार समझना चाहिए।

प्र :- एक ही परमात्मा ज्ञान को यदि पाँच हजार वर्षों पूर्व गीतारूप में, चौदह सौ वर्षों पूर्व क़ुरआनरूप में कहा गया हो तो दोनों में एक ही ज्ञान होना चाहिए था न! वैसा न होकर गीता हिन्दुओं को एक प्रकार से समझ में आना, क़ुरआन के आश्रय में मुस्लमान उसी ज्ञान को किसी और तरह से कह रहे हैं। जब परमात्मा एक है, जब ज्ञान एक है, जब सारे मनुष्य एक ही जाति के हैं, तो एक ही ज्ञान भिन्न-भिन्न रुप में क्यों समझ में आ रहा है। एक ही भाव से क्यों समझ नहीं पा रहे हैं ?

उ :- परमात्मा एक है, परमात्म ज्ञान भी एक है, हम सारे मनुष्य एक हैं यह भावना मनुष्यों के अन्दर नहीं रही। मनुष्यों के अन्दर माया प्रविष्ट होकर, अज्ञानता को उन लोगों के अन्दर बढ़ावा देकर, मत(धर्म) नामक अस्त्र का प्रयोग कर, आप लोग मुस्लमान हैं और हम हिन्दू हैं यह भावना हिन्दूओं में, आप हिन्दू हैं और हम मुस्लमान हैं यह भावना मुस्लमानों में उत्पन्न होने के कारण, उनके वर्ग भेद से ज्ञान भी अलग-अलग समझ में आने जैसा किया। ऐसी बात नहीं है कि एक को सही से समझ में आया, दूसरे को सही से समझ में नहीं आया ऐसा नहीं कह रहे हम। उनका लोगों का ध्यान अपने-अपने मतों(धर्मों) पर होने के कारण, मत(धर्म) पर ध्यान रखनेवाला जो कोई भी हो, मतातीत परमात्म ज्ञान उसे समझ में नहीं आ सकता। परमात्मा कथित भगवद् गीता का सम्पूर्ण भाव न ही हिन्दूओं को समझ में आ सका, न ही क़ुरआन ग्रंथ में कथित ज्ञान सम्पूर्ण रूप से मुस्लमानों को समझ में आ पाया। अपने-अपने मतों(धर्मों) को अनुसरण करते हुए भावों को आपस में बातें करने के कारण, यथार्थ भाव खोकर रह गया, और दोनों तरफ दोनों वर्गों के लोगों को ज्ञान समझ न आ सका। हमारी बात में सत्यता को जानने के लिए उदाहरण के रूप में दोनों ग्रंथों में दिए गए एक ही विषय को लेकर दोनों वर्गों के लोगों को क्या समझा, आओ देखते हैं।

brahmashakam.org

परमात्मा आत्मस्वरूप हैं, सृष्टि से पूर्व एकक परमात्मा सृष्टि के बाद तीन भागों आत्माओं में बँट गए। अपनी पूरी सृष्टि को अधिक से अधिक तीन संख्या के साथ जोड़ा। तीनों आत्माओं में विभाजित कर तीसरे आत्मा में परमात्मरूप में रहते हुए अपनी शक्ति को भरकर दूसरे आत्मा के रूप में, कर्म से जुड़ा हुआ आत्मा अर्थात् पहला जीवात्मा को रखा। जीवात्मा, आत्मा, तथा परमात्मा इन तीनों आत्माओं के सिवा, इस प्रपंच में बाकि सब प्रक्रिति है, ज्ञात होना चाहिए। प्रकृति मनुष्य के अन्दर तीन गुणों के रूप में, तथा बाकि पूरे प्रपंच में भरी हुई है। प्रपंच में तीन आत्माओं के सिवा, बाकि समस्त प्रकृति ही है कह सकते हैं। प्रकृति अर्थात् समस्त वस्तुओं में तीसरी आत्मा अर्थात् परमात्मा प्रविष्ट होकर कण-कण में व्याप्त हैं। इस प्रकार पूरी सृष्टि में परमात्मा व्याप्त हैं। जीवात्मा, आत्माओं में भी परमात्मा व्याप्त होकर हैं, कह सकते हैं।

परमात्मा के लिए, आत्मा के लिए, जीवात्मा के लिए गणित शास्त्र में संख्याओं को अलग कर रखा गया। ज्ञानी अर्थात् बड़े-बुजुर्गों ने बहुत ही विचार करके जीवात्मा के लिए तीन(३) संख्या को, आत्मा के लिए छः (६) संख्या को, परमात्मा के लिए नौ (९) संख्या को पहचान के लिए रखा गया। ३ ६ ९ अर्थात् जीवात्मा, आत्मा परमात्मा तीन आत्माओं को समझाने के लिए रखा गया। अगर ९ ६ ३ कहा जाय तो परमात्मा, आत्मा, जीवात्मा को समझने के लिए रखा गया। इन संख्याओं की पहचान करना, किस पद्धति का अनुसरण कर पहचाना गया हमारी रचनाओं में से हैतुवाद-प्रतिवाद" नामक ग्रंथ में देख सकते हैं। इस प्रकार से संख्याओं की पहचान करवाया परमात्मा ने ही, परमात्मा की जानकारी के बिना, परमात्मा की आज्ञा के बिना कुछ भी नहीं होता है, स्मरण रखना चाहिए। पूरी सृष्टि तीन आत्माएँ तथा एक प्रकृति से भरी हुई है। प्रकृति की सृष्टि भी परमात्मा ने ही किया। संख्याओं में बड़ी संख्या जिसका महत्व कभी कम नहीं होता नौ होने के कारण नौ को परमात्मा के रूप में पहचाना गया। परमात्मा आत्मा से भिन्न होता है। परम+आत्मा= परमात्मा कह कर पुकारा जाता है। परमात्मा अर्थ को सूचित करता शब्द है यह कोई नाम नहीं है। उसी तरह ईश्वर का अर्थ है सबसे बड़ा यह भी कोई नाम नहीं है। इस प्रकार से परमात्मा का कोई

नाम नहीं है। बेनाम परमात्मा प्रत्यक्ष रूप में है। आत्मा, जीवात्माएँ दोनों एक ही स्थान पर, एक ही शरीर में मिलकर रहते हैं। इसलिए इन दोनों आत्माओं को जोड़ी आत्माएँ कहा गया। परमात्मा पूरे प्रपंच में कण-कण में व्याप्त है, जीवात्मा, आत्मा दोनों एक शरीर में आश्रय लिए हुए हैं। उन दोनों आत्माओं में जीवात्मा कोई कार्य नहीं करता है, शरीर में एक ही स्थान पर रहता है। किन्तु दूसरी आत्मा पूरे शरीर में व्याप्त होकर, शरीर को शक्ति प्रदान कर कार्य करवाते हुए संचालन करती है। आत्मा कार्य करती है उस कार्य से उत्पन्न सुख और दुखों को जीवात्मा अनुभव करने के सिवा, जीवात्मा का दूसरा कोई कार्य नहीं है। शरीर में परमात्मा कण-कण में मौजुद है। परमात्मा शरीर के अन्दर, शरीर के बाहर समस्त सृष्टि में व्याप्त है, जबकि आत्मा केवल शरीर में ही व्याप्त है, और जीवात्मा शरीर के अन्दर सूई के नोक जितना स्थान में अणु मात्र रहता है। जीवात्मा शरीर में कर्म को अनुभव करने के सिवाए दूसरा कोई कार्य नही है। उसी तरह परमात्मा का भी कोई कार्य नहीं है। परमात्मा सर्व प्रपंच में व्याप्त होकर साक्ष्य बनकर सब देखता रहने के सिवाए कोई कार्य नहीं कर करता है इसलिए परमात्मा को रूप, नाम, क्रिया रहित कह सकते हैं।

जीवात्मा, परमात्मा दोनों बेकाम हैं, मध्य में मौजुद आत्मा एक क्षण भी विश्राम किए बिना शरीर में निरन्तर कार्य करते रहती है। जाग्रत अवस्था, स्वप्न, निद्रा तीनों स्थितियों में आत्मा कार्य करते रहती है। निद्रा में भी साँस की प्रक्रिया, जीर्ण प्रक्रिया आदि ऐसे कितने ही शरीर के कार्यों को अविराम करते रहती है। शरीर में जीवात्मा कुछ न करने पर भी सारे कार्यों को आत्मा जन्म से लेकर मरण तक, निद्रा से लेकर जाग्रतावस्था तक, उसी तरह मरण से लेकर जन्म तक, जाग्रतावस्था से लेकर निद्रा तक जीवात्मा का संचालन करते हुए उससे जबर्दस्ती अनुभव करवाती है। इस प्रकार आत्मा जीवात्मा के साथ रहकर संचालन करते रहती है। प्रपंच में जो शरीर जैसा चलता है, आत्मा उसे वैसे ही चलाती है, जीवात्मा सब अनुभव करते हुए किस भाव में रहता है, सब कुछ परमात्मा हर शरीर पर ध्यान रखे हुए है। इसलिए गीता में परमात्मा को साक्ष्यभूत कहा गया है। शरीर में जीवात्मा अंधा, बहरा, लंगड़ा, गूंगा, कुल मिलाकर हिल डुल नहीं सकता अर्थात् अपाहिज

बना हुआ, शरीर का अधिपति पूरे शरीर में व्याप्त आत्मा शरीर में अव्यवों को उपयोग कर शरीर को तथा शरीर के अन्दर जीवात्मा को चलवाती है. जीवात्मा, आत्मा द्वारा पहुँचे समाचार से जीता है। आत्मा, जीवात्मा को परमात्मा देखते रहता है।

इस प्रकार सृष्टि में समस्त जीवों अर्थात् प्राणियों के शरीर के अन्दर जीवात्मा आत्माएँ जोड़ी आत्माएँ होती हैं, उन से किसी प्रकार का कोई संबंध न रख कर, कोई सलाह न देकर केवल साक्ष्यरूप में रहना ज्ञात हो चुका है न ! यह विधान सूचित हो सके परमात्मा ने प्रत्येक मनुष्य के हथेली पर रेखाओं को आत्माओं के प्रतीकरूप में रखा गया। हथेली पर नीचे के दोनों रेखाएँ एक दूसरे से मिली हुई होती हैं। उन मिली हुई दोनों जोड़ी रेखाओं को जीवात्मा आत्माओं के रूप बड़े-बुजुर्गों ने पहचाना। उन दोनों रेखाओं में से नीचे की रेखा को जीवात्मा, तथा ऊपर की रेखा को आत्मा कहा गया। ये दोनों रेखाएँ अंगुठे के ऊपरी भाग में एक दूसरे से मिलकर या काफी नजदीक रहकर जोड़ी आत्माएँ कहलाए गए हैं। उन दोनों रेखाओं के बगल में एक और रेखा इन रेखाओं से न मिलकर रहना विशेषता दर्शाता है। उस तीसरी रेखा को शरीर में परमात्मा कहा गया है। शरीर में कर्मेन्द्रियों में मुख्य है हस्त। हस्त में (हथेली में) तीन रेखाएँ तीन आत्माओं का पहचान चिन्ह होने के कारण, निद्रा से जागते ही दुसरे का मुख न देख कर, अपने हथेलियों को देखो, पूर्व बुजुर्ग कहा कहते थे, अनेक लोगों को हथेली देखने की आदत डाली। हमने बचपन में ही अनेक लोगों को सुबह उठते ही हथेली देखते हुए देखा। ऐसा क्यों कर रहे हो हमने कुछ लोगों से पुछा भी। उस दिन किसी ने सही-सही जवाब नहीं दिया। उन लोगों का कहना था कि सबसे पहले अपने हथेली को देखने के बाद दूसरे को देखने से, उनके द्वारा आने वाला मुसीबत टल जाएगा। तब हमने उस बात को सच समझा। लेकिन आज पता चला कि वह असत्य बात थी। सुबह उठते ही हथेली में खींची रेखाओं को देखने से ज्ञान स्मरण में आएगा कि वह एक जीवात्मा है, उसे आत्मा चलाती है, परमात्मा सब पर ध्यान रखते हुए साक्ष्यभूत हैं, परमात्मा स्मरण में आ सके बड़े-बुजुर्गों ने ऐसा आचरण करने को कहा,

समय व्यतीत होने के साथ-साथ विवरण कहीं खोकर रह गया और केवल आचरण ही मनुष्यों के पास बचा रहा। आजकल हथेली को देखने की प्रथा भी जाती रही।

शरीर में हाथों को पाँच कर्मेन्द्रियों में प्रधान कहा गया। इसलिए परमात्मा ने तीन आत्माओं के पहचान चिन्ह के रूप में रेखाओं को हथेली पर परमात्मा खींच कर दिखलाया। उसी तरह से "ज्ञानेन्द्रियानाम् नयनं प्रधानं " अर्थात् पाँचों ज्ञानेन्द्रियों में आँखें प्रधान हैं। इस कारण हस्त के जैसे ही आँखों में भी दर्शाया गया है। आँख को अगर ध्यान से देखें तो सफेद भाग दिखलाई पड़ेगा, उस सफेद आँख के अन्दर काला आँख नजर आएगा, उस काले आँख में बिलकुल छोटा सा सरसों के दाने जितना जिसे आँख की पुतली कहा जाता है। आँख के सफेदी भाग को परमात्मा, सफेद आँख के अन्दर काले भाग को जो आधे इंच से कम गोलाकार विस्तार में आँख का तार को आत्मा, तथा आँख के तार के मध्य में सरसों के दाने जितना काले रंग का गोलाकार भाग को जीवात्मा के रूप में बड़े-बुजुर्गों ने गणना की। ज्ञान से अनजान लोगों को दिखलाकर तेरे आँख में जीवात्मा, आत्मा, परमात्मा के चिन्ह हैं, प्रति दिन जब अवसर मिले, आईना देखो जब दृष्टि में दृष्टि को रख कर देखो कहा गया। कुछ और ज्ञानियों ने रूप और दृष्टि को एक कर देखने को कहा। इस प्रकार से तेरी दृष्टि से तेरे आँख को देखो, ऐसा देखने से परमात्मा, जीवात्मा, तथा मध्य में आत्मा सूचित होगा कहा। बड़े-बुजुर्गों कहने के कारण पूर्व स्वयं ही अपने आँख को आईने में देखा करते थे। जब आईना नहीं था सामने खड़े मनुष्य के आँख में सीधे देखा करते थे। इसे पूर्व नजर से नजर को देखना कहा करते थे। और इस तरह शरीर में तीन आत्माओं को कर्मेन्द्रिय यानि हस्त में, ज्ञानेन्द्रिय यानि आँखों में बड़े-बुजुर्गों ने पहचान किया। आज सारे मनुष्यों के हाथ, आँखें होते हुए भी उन में तीन चिन्हों को नहीं जान पायें।

प्रति शरीर में तीन आत्माओं का वास होता है उसमें चलवाया जानेवाला जीवात्मा एक, चलानेवाला आत्मा दूसरा, तीसरा परमात्मा जो कुछ नहीं करता आध्यात्म विद्या में सूचित हो रहा है। इन तीन आत्माओं के बारें में ब्रम्हविद्या शास्त्र अर्थात् भगवद् गीता में, कुरआन ग्रंथ में कहा गया है।

श्री कृष्ण ने भगवद् गीता में पुरूषोत्तम प्राप्ति योग में १६, १७ श्लोकों में तीन आत्माओं को तीन पुरूषों के साथ समानता करते हुए कहा है।

१६ श्लोक:- द्वाविमौ पुरूषौ लोके क्षरश्र्चाक्षर एव च ।
क्षर: सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते ।।

१७ श्लोक:- उत्तम: पुरूषस्त्वन्य: परमात्मेत्युदाहृत: ।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वर: ।।

भावार्थ:- "लोक में दो प्रकार के पुरूष(आत्माएँ) हैं। जिन्हें क्षर पुरूष, अक्षर पुरूष कहते हैं। क्षर पुरूष समस्त प्राणियों के शरीर के अन्दर वास करता है। अक्षर पुरूष, क्षर के साथ मिलकर उन्हीं शरीरों में निवास करता है।" "क्षर अक्षर दोनों पुरूषों के अलावा अन्य एक और पुरूष भी रहता है। तीसरा पुरूष, क्षर पुरूष की अपेक्षा तथा अक्षर पुरूष की अपेक्षा उत्तम पुरूष है। इसलिए उन्हें पुरूषोत्तम, परमात्मा नाम से कहा गया है। तीसरी आत्मा परमात्मा ही तीन लोकों में कण-कण में व्याप्त होकर ईश्वर नाम से कहा जाता है।"

इस प्रकार से तीन आत्माओं के बारें में भगवद् गीता में बोध किया गया, क़ुरआन ग्रंथ में ५० वाँ सुरा में १७, १८, २१ वें आयतों में कुछ इस प्रकार से कहा गया है। (१७) प्रति व्यक्ति के पास दो मौजुद रहते हैं। एक दाहिने बैठा है; दूसरा बायें। (१८) ज़बान से कोई बात निकलने से पहले ही उसे अंकित कर सुरक्षित कर रखने के लिए मौजुद संरक्षक तैयार बैठा है। (२१) प्रति एक हांकनेवाले के साथ, एक साक्ष्यभूत(गवाह) के साथ हाजिर होता है।

१७ वाँ आयत में प्रति व्यक्ति में तीन मौजुद होना सूचित हो रहा है। १८ वाँ आयत में जीवात्मा कोई भी गलती करे उसे अंकित करने वाला संरक्षक तैयार बैठा है कहना, यहाँ पर संरक्षक या आत्मा ही सभी कार्यों को करता है, सूचित हो रहा है। तीसरा पुरूष परमात्मा है सूचित हो रहा

है। २१ वाँ आयत में प्रति व्यक्ति(प्रति जीवात्मा) एक हांकनेवाले के साथ (एक चलानेवाला आत्मा के साथ) एक साक्ष्यभूत (परमात्मा) के साथ हाजिर होगा(धरती पर जन्म लेगा) कहा गया। इन सब पर गौर करें तो, भगवद् गीता के अनुसार एक शरीर में तीन आत्माओं का मिलन नहीं होता समझाना ही मुख्य उद्देश्य रहा सूचित हो रहा है। हमने पहले ही कहा था कि प्रति शरीर में रहकर चलानेवाला आत्मा तथा साक्ष्यभूत परमात्मा हैं। ५० वाँ सुरा में १७, १८, २१ आयतों में तीन आत्माओं के बारें में सूचित करने के बावजुद, उन आयतों में छिपे यथार्थ भाव को न समझ कर दूसरी तरह से समझना आश्चर्यजनक बात है। उसी तरह हिन्दूओं में स्वामीजन, गुरू जनों के लिए भी तीन आत्माओं के बारें में न समझ पाना आश्चर्यजनक बात है। हमने गीता में तीन पुरूषों(तीन आत्माओं) के बारें में बताते हुए त्रैत सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, लेकिन ईसाईयों ने त्रित्व(त्रिनिटि) बोध कर रहा हूँ कहकर हिन्दूओं ने हमें ईसाई कह कर आरोप लगाना कितनी अचरज की बात है।

सृष्टि के आदि में ही परमात्मा ने महाभूत यानि आकाश द्वारा ध्वनिरूप में सूचित ज्ञान को आदि में ही सूर्य ने मनु को सूचित किया, उसी ज्ञान को पाँच हजार वर्षों पूर्व भगवान ने अर्जुन को सूचित किया। इस प्रकार से भारतवर्ष में परमात्म ज्ञान सूचित हुआ, और वही परमात्म ज्ञान जिब्राईल द्वारा मोहम्मद प्रवक्ता से कहा गया। एक ही परमात्म ज्ञान कहने का कारण, वही ज्ञान भगवद् गीता में पुरूषोत्तम प्राप्ति योग में १६, १७, श्लोकों में तीन पुरूषों का होना बताया गया, तीन पुरूषों का ज्ञान ही क़ुरआन में ५० वाँ सुरा १७,१८, २१ आयतों में कहते हुए, प्रति मनुष्य के पाप को अंकित करनेवाला, दूसरा साक्ष्यभूत होकर रहनेवाला कहा गया। सृष्टि के आदि से परमात्मा फलाँ पुरूषों के बारें में(तीन आत्माओं के बारें में) कह रहे हैं न ही हिन्दू जान पायें, न ही मुस्लमान जान पायें। इस विषय को न ही ईसाई ही जान सकें. त्रित्व उनके समाज में होते हुए भी वे परमात्म ज्ञान को अलग ही तरीके से बता रहे हैं। वे बता रहे त्रित्व में परमात्मा द्वारा कहा गया तीन आत्माओं का संबंध ही नहीं है। पिता, पुत्र, विशुद्धात्मा कह रहे हैं, पिता विशुद्धात्मा एक ही होने के कारण उसे

द्वित्व कहा जाएगा। उनके बोध में तीन पुरूषों के बारें में हो, न ही आत्माओं का भाव कहीं नजर नही आएगा। कुल मिलाकर प्रपंच में तीन आत्माओं का ज्ञान मालूम ही न हो पाया है।

सृष्टि के आदि से ही एक ज्ञान होते हुए भी, मध्य में मतों(धर्मों) ने आकर ज्ञान को भिन्न-भिन्न रूप में, भगवान को भिन्न-भिन्न कर दिया है, कुछ लोगों का कहना है कि हम ही सच्चे ईश्वर भक्त हैं, हमारा मत(धर्म) ही सच्चा है, कुछ और लोगों का कहना है कि हमारा ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। मत-भेदों के उत्पन्न होने से, परमात्मा कथित ज्ञान को भुलाकर, उनके अपने ज्ञान को परमात्म ज्ञान कह रहे हैं। स्वर्ग-नरक जो है ही नहीं उसकी कल्पना कर कहीं और दिखलाकर लोगों को भ्रमित कर रहे हैं। परमात्मा कथित स्वर्ग-नरकों को मनुष्य कल्पना कर रहा है। परमात्मा कथित स्वर्ग और नरक यहीं प्रत्यक्ष में होते हुए भी उसे अनदेखा कर रहा है। स्वर्ग और नरक नजर के सामने होते हुए भी ग्रहण न कर मनुष्य अंधा बन गया है। परमात्म ज्ञान को तथा उसकी विशेषता को नहीं जान पा रहा है। परमात्मा धरती पर अवतरित होकर कहेंगे तो भी, लोग यहीं मानेंगे कि ज्ञान बतानेवाला हमलोगों जैसा मनुष्य ही है खिल्ली उड़ाते हुए कहेंगे कि उनके बताए ज्ञान की अपेक्षा मुझे ज्ञात ज्ञान ही उत्कृष्ट है। इसलिए कहा जाएगा कि सच्चा ज्ञान सभी मतों(धर्मों) में लुप्त हो गया है। जब ऐसी स्थिती बन जाती हो परमात्मा पुनः अपने ज्ञान को पुनः उद्धार करेंगे। पुनः उद्धार करने हेतु एक बार फिर परदे के पीछे से अपने सेवकों(दूतों), ग्रहों द्वारा कहलवाऐंगे। या फिर वे ही स्वयं भेश बदलकर मानवरूप में कहीं किसी स्थान पर अपने ज्ञान को कह जाऐंगे। कथित ज्ञान ही आज धरती पर सभी मतों(धर्मों) के लिए यथार्थ ज्ञान होगा। लोगों के जानकारी के बिना आकर किसी स्थान में कथित ज्ञान ही सर्व प्रपंच को राह दिखला सकता है। कुछ लोग परमात्म ज्ञान को शीघ्र ही ग्रहण कर लेंगे, ग्रहण न करनेवाले की संख्या अनेक होते हुए भी, अंततः वे सब एक ही राह में चल कर एक ही ज्ञान पर विश्वास करने का दिन जरूर आएगा। नया-नया कथित परमात्मा ज्ञान लोगों को आज नहीं तो कल, इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में मानना ही पड़ेगा और कोई रास्ता ही नहीं बचेगा उनके पास। मतों (धर्मों) में बँट कर अलग-अलग ज्ञानियों में

विभाजित होनेवाले सारे लोग एक ही ज्ञान के आश्रय में आने का दिन जरूर आएगा ऐसा मेरा मानना है।

प्र :- धरती पर जब सारे धर्म अधर्मों में बदल जाऐंगे, माया के प्रभाव के कारण जब अज्ञानता ही ज्ञान बन जाता है, मैं अवतरित होकर यथार्थ परमात्म धर्मों को ज्ञानरूप में सूचित करूँगा कहा गया है। क्या वैसी परिस्थिती अब उत्पन्न हो गयी है ? परमात्मा ही भगवानरूप में आकर कथित भगवद् गीता के होते हुए भी, बाइबिल ग्रंथरूप में होते हुए भी, महाज्ञानी जिब्राईल कथित क़ुरआन ग्रंथ होते हुए भी, वे सभी ग्रंथ जब परमात्म ज्ञान, तथा परमात्मा धर्मों को बोध कर रहे हैं तो एक बार फिर परमात्मा अवतरित होकर ज्ञान बताऐंगे कहना, क्या आपकी बात सही है ?

उ :- परमात्मा कथित ज्ञान गीता में हो, या अन्य ग्रंथों में हो परमात्मा धर्मों को नहीं बताया गया ऐसा हम नहीं कह रहे हैं। परमात्मा ने सृष्टि के आदि में ही धर्मों को बताकर उसकी स्थापना कर दी थी। जब धर्म मालूम न पड़ पाए उसके स्थान पर अधर्मों में वृद्धी होती हो जब, वापस अपने धर्मों को सूचित करने निमित्त, अधर्मों को नाश करने निमित्त मैं आऊँगा कहा था परमात्मा ने। उन्होंने यह नहीं कहा था कि उनके धर्मों को बोध करनेवाले ग्रंथ नहीं हैं। उनके ग्रंथ धरती पर उपलब्ध होते हुए भी, प्रजाजान उन ग्रंथों में कथित धर्मों को ज्ञात न कर, उस स्थान पर जब सारे अधर्म धर्म बन कर लोगों में रच-बस जाऐंगे तब मैं आऊँगा कहा था। परमात्मा इस बार पुन: आते हैं तो इससे पहले कथित धर्मों को सूचित करते हुए उस समय में अनकहे विषयों को भी सूचित करेंगे। बाइबिल में भी कुछ ऐसा ही कहा गया है आदरणकर्ता के रूप में आनेवाला इस ज्ञान को ही नही बल्कि अनकहे समस्त ज्ञान को सूचित करेंगे ऐसा १६ अध्याय में १२, १३, १४ वाक्य में बताया गया है। परमात्मा जब आऐंगे ग्रंथों में विषयों को ही नही बल्कि और भी कई विषयों को कह जाऐंगे। और तब समस्त जन सभी मतों के लोगों को एक ज्ञान में आना ही पड़ेगा। यह भविष्य में होनेवाला सत्य है।

प्र :- आप भविष्य में घटनेवाले विषयों को बता रहे हैं। यदि वैसा समय आता हो, सब एक ही ज्ञान पर विश्वास रखते हों, इससे श्रेष्ठ समय दूसरा नहीं हो सकता। परन्तु कुछ धर्मों में इसे ही अंतिम बोध कहा जा रहा है। इस्लाम मत(धर्म) में मोहम्मद प्रवक्ता को अंतिम प्रवक्ता, क़ुरआन ग्रंथ को अंतिम ग्रंथ कह रहे हैं, यदि क़ुरआन ही अंतिम दैवग्रथ है, यदि मोहम्मद प्रवक्ता ही अंतिम प्रवक्ता हैं तो, बाद में परमात्मा मनुष्यरूप में आने का कोई मतलब ही नहीं बनता। अगर अवतरित होते हो तो मोहम्मद को आखरी प्रवक्ता कहना विफलता उत्पन्न कर सकता है और क़ुरआन ग्रंथ को भी अंतिम ग्रंथ नहीं कहा जाएगा। इस बारें में आप क्या कहेंगे ?

उ :- क़ुरआन ग्रंथ सर्वदा अंतिम दैवग्रंथ ही रहेगा, इस बात से प्रपंच में कोई भी मनुष्य इन्कार नहीं कर सकता। धरती पर अज्ञात रह गए धर्मों को पुनः ज्ञात करवाने हेतु परमात्मा मनुष्यरूप में(दूत बनकर) अवतरित होकर, धरती पर धर्मों को पुनः उद्धार कर, अज्ञात रह गए सारे धर्मों को ज्ञात कर यदि मनुष्य सम्पूर्ण ज्ञानी बन जाता है, फिर भी क़ुरआन को अंतिम दैव ग्रंथ ही कहा जाएगा इसमें कोई बदलाव नहीं होगा। बड़े-बड़े ज्ञानियों को भी क़ुरआन को अंतिम दैवग्रंथ कहना पड़ेगा। क्योंकि सृष्टि के आदि में ही वाणी द्वारा परमात्म ज्ञान सूचित हुआ उन दिनों ग्रहों यानि सूर्य और जिब्राईल को परमात्मा सूचित ज्ञान ज्ञात हुआ। सूर्य द्वारा सृष्टि के आदि में ज्ञान सूचित हुआ। सूर्य ने सर्वप्रथम धरती पर मनु को ज्ञान सूचित किया, मनु द्वारा इक्ष्वाकु नामक राजा ने जाना। इक्ष्वाकु के द्वारा बाकि प्रजा जनों को मालूम पड़ा। इस तरह धरती पर पहले सारे मनुष्यों ने ज्ञान की जानकारी कीं। और सूचित हुआ वह ज्ञान ही पाँच हजार वर्षों पूर्व श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को बोध हुआ। और वही ज्ञान व्यास द्वारा भगवद् गीता के रूप में लिखा गया। इसलिए भगवद् गीता को प्रपंच में प्रथम दैव ग्रंथ कहा गया है। बातों के रूप में सूचित हुआ गीता ज्ञान को, अक्षर रूप में लिख कर प्रजा जनों को सूचित किया व्यास ने, इसलिए उन्हें प्रथम प्रवक्ता कह सकते हैं। चौदह सौ वर्षों पूर्व जिब्राईल दूत ने हीरा गुफा में मोहम्मद प्रवक्ता जी को दैवज्ञान सूचित किया। जिब्राईल द्वारा सूचित ज्ञान को मोहम्मद प्रवक्ता जी ने प्रजा जनों को क़ुरआन रूप में पहुँचाया। जिब्राईल कथित

ज्ञान ने क़ुरआन ग्रंथ का रूप लिया। सर्व प्रथम कथित ज्ञान ही क़ुरआन में बताने के कारण, भगवद् गीता के बाद बोध किया गया ज्ञान ही क़ुरआन में होने के कारण, गीता प्रथम दैवग्रंथ बना, क़ुरआन अंतिम दैव ग्रंथ बना। प्रथम कथित प्रथम ही होता है. प्रथम ग्रंथ में कथित ज्ञान क़ुरआन के अलावा और किसी ग्रंथ में नहीं है इसलिए क़ुरआन को अंतिम ग्रंथ कहा गया। पहला तथा अंतिम दोनों में एक ही ज्ञान होने के कारण प्रथम कथित प्रथम दैवग्रंथ कहलायेगा तथा तत्पश्चात् कथित अंतिम दैवग्रंथ कहलायेगा। इन दोनों में समन्वय है इसलिए ऐसा कहा गया। सुरा १२ में १११ वाँ आयत में "क़ुरआन में कथित सारी बातें कल्पित विषय नहीं हैं। वास्तव में ये इससे पहले आयें ग्रंथों का ध्रुवीकरण है।" इस बात से सिद्ध होता है कि भगवद् गीता में कथित ज्ञान के सारे विषय ही क़ुरआन में भी कहा गया है। परमात्मा कथित भगवद् गीता का अनुसरण क़ुरआन में किया गया है, दोनों में मौजुद ज्ञान सृष्टि के आदि में कथित ज्ञान ही है पता चल रहा है। दोनों ग्रंथों में मौजुद ज्ञान जब प्रजा जनों से ग्रहण न हो पाएगा, तब परमात्मा अवतरित होकर ग्रंथों में विद्यमान धर्मों को पुनः उद्धार कर जाऐंगे। इन्हें नकार कर दूसरा ज्ञान बोध नहीं करेंगे। परमात्मा ने प्रथम कथित ज्ञान आगे पीछे सूचित होने के कारण ही उनका नाम प्रथम ग्रंथ तथा अंतिम ग्रंथ पड़ा, उन दोनों ग्रंथों में कथित ज्ञान को अलग-अलग नहीं समझना चाहिए। परमात्मा जब भी अवतरित होंगे प्रथम कथित ज्ञान को पुनः प्रतिष्ठित करने हेतु ही आऐंगे, प्रथम कथित ज्ञान को नकारने नहीं । परमात्मा अवतरित होकर जब धर्मो की संस्थापना करने आऐंगे पूर्व ग्रंथों यानि प्रथम एवं अंतिम ग्रंथों में कथित सारे धर्म लोगों को अच्छी तरह से समझने में सुलभ हो सकता है। इस कारण जितना समय भी व्यतीत होता रहे सारे दैवग्रंथ हमेशा शाश्वत् ही रहेंगे। पुनः जब भी परमात्मा अवतरित होकर ज्ञान सूचित करेंगे वह ज्ञान आदि एवं अंतिम ग्रंथों में मौजुद ज्ञान ही होगा ज्ञात रहना चाहिए।

*****

किसी विषय को समर्थन करने के लिए शास्त्र की आवश्यकता जितनी होती है, वैसे ही किसी विषय को खंड़न करने के लिए शास्त्र की आवश्यकता उतनी ही होती है।

*****

सत्य को हजार लोग नकारें वह असत्य नहीं होता।

असत्य को हजार लोग कहें वह सत्य नहीं होता.

thraithashakam-36